नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन में स्वरमालिका की भूमिका

दीपिका पटेल
गायन विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. रश्मिका मिश्रा
गायन अनुभाग, महिला महाविद्यालय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सार-संक्षेप

प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक देखा जाए तो स्वरमालिका अथवा सरगम गीत का कोई भी गेय रूप प्राप्त नहीं होता है परन्तु वर्तमान समय में एक स्वतंत्र गायन शैली के रूप में इसे देखा जा सकता है। जिसका प्रचार-प्रसार पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी द्वारा किया गया। संगीत जगत में स्वरमालिका एक महत्त्वपूर्ण गायन शैली है जिसके अभ्यास से रागों को आसानी से समझा व गाया जा सकता है। विद्यार्थी को इसे सीखने एवं समझने में सहजता होती है। यह स्वरों से जुड़ी एक गुत्थी होती है जिससे किसी भी राग को आसानी से समझा जा सकता है। प्रारम्भिक विद्यार्थियों को सर्वप्रथम स्वरमालिका का ही अभ्यास कराना चाहिए। जिससे उसका शास्त्रपक्ष तो मजबूत होगा ही साथ ही उसका क्रियापक्ष भी मजबूत होगा। राग के साथ-साथ विद्यार्थी विभिन्न ताल भी सरगम गीत के माध्यम से सीख सकता है। जैसे–त्रिताल, एकताल, रूपक, झपताल, सूलताल इत्यादि। संगीत में रियाज के लिए एक सही दिशा का होना बहुत जरूरी है, नहीं तो विद्यार्थी आधी-अधूरी जानकारी के साथ गाने व बजाने लगता है। स्वर के साथ-साथ ताल की भी जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। उस्ताद करीम खाँ जी कहते है कि 'स्वर गया तो सर गया ताल गया तो बाल गया।' इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि वह स्वरों का खूब अभ्यास करे। उसके बाद जब वह ख्याल गायन शुरू करे तो हर एक राग में स्वरमालिका जरूर सीखे जिससे उसका चलन आसानी से समझ सके। इसी उद्देश्य से शोधार्थिनी ने इस विषय को अपने शोध पत्र हेतु चुना है ताकि भविष्य में शिक्षण संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में अन्य विधाओं की भाँति स्वरमालिका का भी अभ्यास कराया जाए।

मुख्य शब्द : स्वर, स्वरमालिका, अभ्यास, राग, सरगम गीत, विधाएँ।

शोध-पत्र

प्रस्तावना

सर्वप्रथम हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि शास्त्रीय संगीत क्या है? इसका प्रयोग गायन में किस प्रकार किया जाता है? इसकी परिभाषा की ओर दृष्टि डाले तो पाते है कि जिस संगीत में शास्त्र के नियमों को ध्यान में रखकर स्वर, लय, राग और ताल आदि में बाँधकर रागों को गाया बजाया जाता है उसे शास्त्रीय संगीत कहते है। नियमों में बँधे होने के कारण यह काफी विस्तृत है। इसके अंतर्गत ध्रुपद, धमार, ख्याल, तिरवट, तराना आदि आते है। (संगीत सूर और साज, 145)

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही संगीत का प्रचार एवं प्रसार का श्रेय महान विभूति पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी को जाता है। पंडित जी ने थाट पद्धति का निर्माण किया उसी के आधार पर रागों को गाया जाता है तथा संगीत के क्रियात्मक और शास्त्रपक्ष दोनों को जन-जन तक पहुँचाया ताकि विद्यार्थियों में शास्त्रपक्ष के साथ क्रिया पक्ष की भी अच्छी जानकारी प्राप्त हो सके। वर्तमान समय में विभिन्न गायन शैलियाँ प्रचार में है, जैसे– ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, स्वरमालिका, लक्षणगीत, त्रिवट इत्यादि। इनमें से कुछ गायन शैलियाँ तो प्रचार में है परन्तु कुछ शैलियों का महत्त्व कम होता जा रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने 'उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन में स्वरमालिका की उपयोगिता' को दर्शाया है। ताकि भविष्य में इसके महत्त्व को महसूस कर प्रचार में लाया जाय।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन में स्वरमालिका का महत्त्व

स्वर मालिका स्वरों के संयोजन, चयन और उसके क्रम को निर्धारित करती है। चूंकि प्रत्येक स्वर से विभिन्न प्रकार के रसों की उत्पत्ति होती है जिसके माध्यम से रागों का स्वरूप, उसकी प्रवृत्ति एवं भाव को समझना आसान हो जाता है। स्वरमालिका का प्रारूप स्वतन्त्र गायन शैली के रूप में देखा जा सकता है। इसका मुख्य श्रेय पं. विष्णुनारायण भातखण्डे जी को जाता है। इनके द्वारा लिखित पुस्तक क्रमिक पुस्तक मालिका

एवं स्वरमालिका आदि पुस्तकों में स्वरमालिका प्राप्त होती है। क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 में पंडित जी ने स्वरमालिका को 'चीज' शब्द से संबोधित किया है।

स्वरमालिका से तात्पर्य

किसी एक राग में निबद्ध उसके संपूर्ण स्वरों के स्वर समुदाय से संबंधित है जो उसके चलन के साथ-साथ उस राग का स्वरूप, उसकी बारीकियाँ एवं उस राग के स्वभाव को भलीभाँति प्रकार से समझा जा सकता है।

क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 के अन्तर्गत स्वरमालिका का परिभाषा इस प्रकार दी गयी है– ''किसी राग में लगने वाली स्वरों की तालबद्ध रचना, जिससे राग का स्वरूप स्पष्ट होता हो, स्वरमालिका अथवा 'सरगम' कहलाता है।'' (भारतखण्डे 15)

दक्षिण भारतीय संगीत में स्वरमालिका को 'सुरावर्त' कहा जाता है।

अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थी चाहे प्रारम्भिक शिक्षा ले रहा हो या उच्च दोनों जगह ही स्वरमालिका अपना विशेष योगदान देती है। शिक्षा की प्रारम्भिक अवस्था में देखा जाए तो विद्यार्थियों को सर्वप्रथम वर्णमाला तथा व्यंजनों का मूल अभ्यास करवाया जाता है। धीरे-धीरे जब वो सीख जाते है, तो उनको वर्णमाला तथा व्यंजनों के माध्यम से शब्द बनाव करने को देते है। किसी भी विषय क्षेत्र में यही नियम लागू होता है।

संगीत की ओर दृष्टि डाले तो यह एक जटिल विद्या होने के साथ-साथ एक गुरुमुखी विद्या है। यह समुद्र की भाँति गहरा है–इसको तर पाना असम्भव सा है। इसमें रियाज की नितान्त आवश्यक होती है। बिना रियाज के स्वरों को समझ पाना नामुमकिन सा है। वर्तमान समय की जो संगीत शिक्षा प्रणाली है उसके अंतर्गत यही देखा जा रहा है कि विद्यार्थियों को जब राग सिखाया जाता है तो सबसे पहले उस राग का आरोह-अवरोह तथा पकड़ आदि को याद करा दिया जाता है जिससे विद्यार्थी उस राग में प्रयुक्त होने वाले स्वर समुदाय, उसकी बारीकियाँ, स्वरों का अल्पत्व-बहुत्व आदि को समझने में असमर्थ होता है। स्वर-संबंधी समस्याएँ बनी रहती है। कई रागों के स्वर एक जैसे होते है परन्तु उनमें स्वरों का चलन भिन्न होने से वे अलग राग बन जाते है। इन सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान होना संगीत के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। थोड़े से परिश्रम से राग का समग्र स्वरूप जान लेने के उद्देश्य से मेरी दृष्टि में स्वरमालिका से अच्छा और कोई साधन नहीं। इसलिए यह आवश्यक है कि जब भी राग शुरू करे सर्वप्रथम आरोह-अवरोह, पकड़ के उपरान्त उस राग की सरगम गीत भी सिखाया जाय ताकि विद्यार्थी उसके स्वर समुदाय को अच्छे से समझ सके। यह अत्यन्त रूचिकर होता है विद्यार्थी इसको रुचि के साथ सीखते है क्योंकि इसमें किसी भी राग के सिर्फ स्वर होते है। पं. ओमकार नाथ ठाकुर द्वारा लिखित पुस्तक 'संगीताजंलि' के प्रथम भाग के अन्तर्गत 'शिक्षकों की सूचना' में विद्यार्थियों को किस प्रकार से स्वरों का अभ्यास करवाया जाय उस पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने यह भी बताया कि सर्वप्रथम बच्चों को शुद्ध स्वरों से युक्त रागों को सिखाया जाय उसमें सर्वप्रथम तालबद्ध सरगम और त्रिताल में गीत सिखाने के बाद क्रमशः हंसध्वनि, दुर्गा सारंग, तिलंग, भिन्न षडज, देश, खमाज और काफी इन रागों की तालबद्ध सरगम और त्रिताल के गीत सिखाइए।

पुराने जमाने के उस्ताद अपने शागीर्दों को सर्वप्रथम राग का सरगम गीत भलीभाँति याद करवाकर उसका खूब अभ्यास करवाते थे। जिसका आजकल नितान्त अभाव है। इस अभाव के कारण पुराने जमाने के अनेक विलक्षण स्वरमालिका विलुप्त हो गये है। यदि वे स्वरमालिका आज उपलब्ध होते तो हमारे आज के विद्यार्थियों पर बड़ा उपकार होता। इसी अभाव के कारण ही शोधार्थिनी अपना लेखन कार्य इस विषय पर कर रही है ताकि संगीत जगत में इस विषय पर विचार कर इसे भविष्य में आगे बढ़ाया जाय। विश्वविद्यालयों, विद्यालयों तथा संगीत संस्थानों के अंतर्गत इसे भी अन्य विधाओं के भाँति सिखाया जाय। वर्तमान समय में प्रत्येक रागों में लगभग स्वरमालिका उपलब्ध है। इन सरगमों को ख्याल गायन जैसे–छोटा ख्याल, बड़ा ख्याल दोनों में प्रयोग कर सकते है। सबसे पहले बुनियादी रागों में ही स्वरमालिका सिखाया जाए जैसे–भूपाली, काफी, यमन, भैरवी, भैरव, सारंग इत्यादि। इसके उपरान्त ही जटिल रागों जैसे–तोड़ी, मारवा, बसन्त पूर्वी, पूरिया मारवा, सोहनी जैसे रागों में सरगम गीत सिखाए। इन सरगमों का प्रयोग ख्याल गायन में सरगम के रूप में, आलाप के रूप में बहुत ही सरलतम रूप में कर सकते है। अगर इन रागों में आपने सरगम गीत सीखा है तो स्वरों को आसानी से मंद्र सप्तक से लेकर मध्य तथा तार सप्तक तक आसानी से अभ्यास किया जा सकता है क्योंकि सरगम तीनों सप्तक में निबद्ध होती है। कुछ राग पूर्वांग प्रधान होती है तो कुछ उत्तरांग। जैसे–राग भैरव, सोहनी, देशकार, परज, जौनपुरी, इत्यादि उत्तरांग प्रधान राग है। इनके स्वर तार सप्तक में ही खिलते है। इसके अतिरिक्त राग यमन, भूपाली, मुल्तानी, भीमपलासी, बागेश्वरी, मालकौंस, पुरिया पुरिया धनाश्री इत्यादि राग पूर्वांग प्रधान है। ये मन्द्र और मध्य सप्तक में ज्यादा खिलते है। इनको ध्यान में रखकर ही स्वरमालिका बनायी जाती है ताकि अभ्यास के दौरान विद्यार्थियों को स्वर लगाव संबंधी परेशानी ना हो। क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से विभिन्न स्वरमालिका प्राप्त होते है जो अलग-अलग राग एवं ताल में निबद्ध है। जैसे–राग यमन-मध्य त्रिताल, राग अल्हैया बिलावल-मध्य झपताल, राग खमाज-आड़ा चैताल, राग भैरव-त्रिताल इत्यादि। इसके अतिरिक्त अन्य विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तक जैसे संगीताजंलि, अभिनवगीतमंजरी, सरल संगीत शिक्षा, अभिनव गीतांजलि, सा रे ग म इत्यादि पुस्तकों में भी स्वरमालिका प्राप्त होती है।

डॉ. तेजसिंह 'टाक' की पुस्तक सरल संगीत शिक्षा भाग 1 से लेकर द्वितीय एवं तृतीय भाग में लगभग 30 स्वरमालिका प्राप्त होते है। पंडित ओंकारनाथ ठाकुर जी की पुस्तक संगीतांजलि जिसके छह भाग है, इसके प्रथम भाग तथा चतुर्थ भाग के अंतर्गत स्वरमालिका प्राप्त होती है। डॉ. आर. वी. कविमंडल द्वारा लिखित पुस्तक सा रे ग म में 85 रागों में स्वरमालिका प्राप्त होती है। अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ही स्वरमालिका बनायी गयी जिसे सीखकर विद्यार्थी लाभान्वित हो सकते हैं।

विद्वानों से साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

नाम - डॉ. मधुछन्दा जी ने स्वरमालिका से सम्बन्धित अपने विचार प्रकट किए है जो इस प्रकार है–

स्वरमालिका संगीत की विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है क्योंकि इसके अभ्यास से किसी भी राग का मूल आधार समझा जा सकता है। विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्रारम्भिक स्तर पर ले रहा हो या उच्च माध्यमिक स्तर पर दोनों ही जगह स्वरमालिका मुख्य भूमिका निभाती है। संगीत शिक्षण के दौरान आपने देखा कि 3 स्तर के विद्यार्थी सामने आते है– पहला वे विद्यार्थी जिन्होंने बिल्कुल भी संगीत नहीं सीखा है, दूसरा वे विद्यार्थी जिनके पास संगीत की कुछ जानकारी होती है, वे कुछ प्रारम्भिक अलंकार एवं रागों की कुछ जानकारी उनके पास होती है, तीसरा वे विद्यार्थी जो किसी भी शिक्षण संस्थानों से संगीत शिक्षा ग्रहण कर रहे होते है उनके पास रागों की अच्छी जानकारी होती है। इस प्रकार कोई भी राग सभी बच्चे समझ पाये ये संभव नहीं है। अतः शुरूआत सरल चीजों से ही करवाया जाए तो विद्यार्थियों को सीखने में सहजता होगी। यह एक क्रम में चलता है तो विद्यार्थी रुचि के साथ सीखते है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि स्वरमालिका किसी भी राग के स्वरूप को पहचानने के लिये यह अच्छा माध्यम माना जा सकता है।

नाम - डॉ. रामशंकर जी ने स्वरमालिका के उत्पत्ति से सम्बन्धित तथा उसके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उसकी उपयोगिता को सिद्ध करने का प्रयास किया है।

पुरानी परंपराओं के अंतर्गत बंदिशों के माध्यम से सुरबोध कराया जाता था जो एक धुन के रूप में होता था जिससे विद्यार्थियों को सीखना आसान हो जाता है। उसी के आधार पर स्वरों को भी बंदिशों के रूप में रच दिया गया जिससे उसकी धुन रट जाये और उस धुन के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वरज्ञान हो जाये। मेरी दृष्टि से इसलिए ही स्वरमालिका बनायी गयी होगी। मैंने अपने संगीत शिक्षण के दौरान स्वरमालिका सीखा था जो राग भूपाली में निबद्ध है। मध्यकाल से यह प्रचार-प्रसार में आ गया था। संगीत शिक्षण के अंतर्गत स्वरमालिका मुख्य भूमिका निभाती है। इसके अभ्यास से बच्चों को आसानी से सुरबोध हो जाता है जिससे वे रागों के चलन को आसानी से समझ पाते है। प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए स्वरमालिका अत्यन्त उपयोगी है। विद्यार्थियों को सीखने में सरलता होती है क्योंकि यह 'धुनप्रधान' होती है। बच्चे आसानी से समझ पाते है। मेरी दृष्टि से स्वरमालिका वर्तमान समय में होना ही चाहिए। किसी भी राग के स्वरूप को आसानी से समझा और सीखा जा सकता है।

द्विदिवसीय कार्यशाला (दिनांक 24.01.2025 से 25.01.2025), संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया गया जिसके प्रशिक्षक गुरु पं. राजा काले थे। कार्यशाला के दौरान आपने विभिनन विधाओं जैसे ख्याल, ठुमरी, दादरा, भजन, गजल, स्वरमालिका इत्यादि विधाओं से अवगत कराया। इसके अतिरिक्त राग माण्ड में एक स्वरमालिका सिखायी जिसका बोल था–सासा रेम मप धनि पध सां...। जो त्रिताल में निबद्ध थी जिसके रचनाकार पं. श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर जी है। पंडित जी ने स्वरमालिका की विशेषताओं को दर्शाते हुए बताया कि यह एक धुन है। धुन के साथ यह एक तालबद्ध रचना है जिसे विद्यार्थी मनोरंजन के साथ आसानी से सीख पाते है। इसके अलावा आपने स्वरमालिका में प्रयुक्त राग के स्वर समुदायों को विभिन्न तरीके से ताल में बांधकर किस तरह गाया जाये? इसे भी बहुत सहज रूप में विद्यार्थियों को सिखाया। यह कार्यशाला संगीत के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद रहा।

विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त साक्षात्कार

प्रस्तुत साक्षात्कार बी.ए. ऑनर्स प्रथम सेमेस्टर म्यूजिक वोकल मेजर-माइनर के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किया गया है जिसमें निम्न विद्यार्थी सम्मिलित थे- अंजू शर्मा, इशिता चौबे, जागृति राय, मनोकामना मौर्या, रागिनी कुमारी, सोनाली राज, श्रेया मुस्कान निहारिका त्रिपाठी, अंकिता मण्डल, श्रेया गुप्ता, मधुरमा पटेल, दीपिका भारती, अंशी चौधरी इत्यादि।

विद्यार्थियों के साक्षात्कार के दौरान मैंने पाया कि जो विद्यार्थी संगीत से बिल्कुल भी नहीं जुड़े है तथा जो विद्यार्थी पहले से जुड़े हुए है उनके लिए भी स्वरमालिका अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। उनका कहना है कि हमलोगों ने राग भूपाली में स्वरमालिका सीखा इसके अभ्यास से राग का चलन, स्वर समुदाय उसका पैटर्न आदि ज्ञात हो जाता है। यह एक धुन की तरह चलती है तो यह सीखना हमलोगों के लिए आसान रहा।

स्वरमालिका के उपरान्त उसी राग में हमलोगों ने बन्दिश (प्रथम नमन गणनायक चरणा) बहुत ही सरलतापूर्वक सीखा क्योंकि इसके स्वरों तथा चलन से हमलोग पहले से अवगत थे।

अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि स्वरमालिका से विद्यार्थियों की नींव मजबूत होती है तथा रागों में लगे स्वर समूह को आसानी से समझ पाते है। राग उत्तरांग प्रधान हो या पूर्वांग। इसे भी स्वरों के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। यह सीखने में सरल तथा रूचिकर होता है। अतः वर्तमान परिदृश्य में देखा जाय तो स्वरमालिका विभिन्न चैनलों के माध्यम से भी जैसे–स्वयं प्रभा चैनल, डॉ. गोपा चक्रवती, सरगम जोन, BAPFHMH-Programme by IGNOU इत्यादि चैनल वर्तमान समय में उपलब्ध है जिसके माध्यम से भी विद्यार्थी सीखकर लाभान्वित हो सकते है।

उपसंहार

यदि यह कहा जाये कि स्वरमालिका एवं राग एक ही सिक्के के दो पहलू है, तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। बिना स्वर के राग कल्पनामात्र है। विद्यार्थी चाहे प्रारम्भिक शिक्षा ले रहा हो या उच्च शिक्षा दोनों के लिए ही स्वरमालिका अत्यन्त उपयोगी है। हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत 'राग प्रधान' है। गाने अथवा बजाने में जो भी विस्तार किया जाता है। उसका मुख्य बिन्दु राग ही होता है। स्वरों के माध्यम से ही राग का निर्माण होता है। बिना स्वर के इसका अस्तित्व मात्र भी नहीं है। सरगम गीत स्वर

ज्ञान के लिए एक अच्छा साधन माना जा सकता है। इसके अभ्यास से विद्यार्थी उसके सूक्ष्म भेद को समझ सकेंगे तथा स्वरों का फैलाव कैसे करें? स्वरमालिका के माध्यम से दिशा-निर्देशन मिल सकता है।

वर्तमान समय में एक बड़ा बदलाव संगीत के क्षेत्र में देखा जा रहा है। अभी तक संगीत एक वैकल्पिक विषय था परन्तु नई शिक्षा नीति के तहत संगीत को मुख्य विषय के रूप में मान्यता मिल चुकी है। इसके साथ ही साथ संगीत के हर विधाओं पर जैसे–लोकगीत, सुगम संगीत, लक्षण गीत, स्वरमालिका, ठुमरी, दादरा, देशभक्ति, पारम्परिक गीत इत्यादि विद्यार्थियों को सिखाया जा रहा। इसके अतिरिक्त अन्य विषय से संबंधित विद्यार्थी जैसे वाणिज्य, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, प्रबंधन इत्यादि के विद्यार्थी भी मल्टीडिस्प्लिनरी तथा कौशल विकास के अंतर्गत आदि विधाओं को सीख पाएँगे। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में एक अच्छा परिणाम देखा जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ठाकुर, ओंकारनाथ, संगीतांजलि प्रथम भाग, ओंकारनाथ ठाकुर एस्टेट, बम्बई, चतुर्थ आवृत्ति, 1992
2. टाक, तेज सिंह, संगीत विज्ञान और गणित, प्रकाशक- बेकरा आलमी फाउण्डेशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2003
3. मिश्र, शैलेन्द्र नाथ एवं मिश्रा, श्रीमती सपना, संगीत सुर और साज, स्वर दिशा प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण
4. कविमण्डन, आर.वी., सरगम गीत, सा रे ग म, प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2013
5. रातंजनकर श्री कृष्ण नारायण, अभिनवगीत मंजरी, भाग-2, संस्कार प्रकाशन, आचार्य एस. एन. रातंजनकर फाउण्डेशन, 1992
6. दिनांक 22.12.2024 को मधुछन्दा जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार
7. दिनांक 15.01.2025 को रामशंकर जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार
8. साक्षात्कार : मधुछन्दा, साक्षात्कारकर्ताः दीपिका पटेल, 22.12.24
9. साक्षात्कारः 1. अंजु शर्मा 2. इशिता चौबे 3. जागृति राय 4. मनोकामना मौर्या 5. रागिनी कुमारी 6. सोनाली राज 7. श्रेया मुस्कान 8. निहारिका त्रिपाठी 9. अंकिता मण्डल 10. मधुरिमा पटेल 11. दीपिका भारती 13. आंशि चौधरी 14. श्रेया गुप्ता, साक्षात्कारकर्ता दीपिका पटेल. 23-01-2025